

दैनिक

संस्करण : जयपुर, टोंक, अलवर एवं कोटा

बढ़ता राजस्थान

Since : 2004 /// कदम बढ़ाएं, सच के साथ

27 साल बाद दिल्ली में भाजपा को स्पष्ट बहुमत

● भाजपा 48
● आप 22
● कांग्रेस 00

आप ने 40 सीटें गंवाई
भाजपा को 71% स्ट्राइक रेट
के साथ 40 सीटों का फायदा

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली। भाजपा ने दिल्ली में 27 साल बाद स्पष्ट बहुमत हासिल किया। दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों में से भाजपा ने 48 और आम आदमी पार्टी ने 22 सीटें जीतीं। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है। भाजपा ने 1993 में 49 सीटें यानी दो तिहाई बहुमत हासिल किया था। 5 साल की सरकार में मदन लाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा और सुषमा स्वराज सीएम बनाए गए थे। 1998 के बाद कांग्रेस ने

15 साल राज किया। इसके बाद 2013 से आम आदमी पार्टी की सरकार थी। इस बार भाजपा को 71% स्ट्राइक रेट के साथ 40 सीटें बड़ीं। पार्टी ने 68 पर चुनाव लड़ा, 48 सीटें जीतीं। वहीं, आप को 40 सीटों का नुकसान हुआ। आप का स्ट्राइक रेट 31% रहा। भाजपा ने पिछले चुनाव (2020) के मुकाबले वोट शेयर में 9% से ज्यादा का इजाफा किया। वहीं, आप को करीब 10% का नुकसान हुआ है। कांग्रेस को भले ही एक भी सीट नहीं मिली, लेकिन वोट शेयर 2% बढ़ाने में कामयाब रही।

केजरीवाल ने स्वीकार की आप की हार, बोले- जनता के बीच रहकर उनकी सेवा भी करते रहेंगे

दिल्ली विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने अपनी पहली प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने भाजपा को बधाई देते हुए कहा कि जनता का फैसला हमें मंजूर है। उन्होंने कहा कि हमें जनता ने पिछले 10 सालों में मोका दिया। हमने कई बड़े काम किया। हमने शिथिल स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई काम किया। उन्होंने कहा कि हम एक जिम्मेदार विपक्ष के नाते काम करते रहेंगे। हम समाज सेवा करते रहेंगे। लोगों के सुख-दुख में शामिल होंगे। केजरीवाल ने कहा कि हम न केवल स्वनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाएंगे बल्कि जनता के बीच रहकर उनकी सेवा भी करते रहेंगे। दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी दिल्ली में विधानसभा चुनाव में एकतरफा जीत हासिल करती हुई दिखाई दे रही है। भाजपा में इसको लेकर जमकर उत्साह है। आतिशी ने कहा कि मुझ पर भरोसा दिखाने के लिए मैं कालकाजी के लोगों को धन्यवाद देता हूँ। मैं अपनी टीम को बधाई देता हूँ जिन्होंने बाहुबल के खिलाफ काम किया। हम जनता का जनादेश स्वीकार करते हैं। मैं जीत गया हूँ लेकिन यह जश्न मनाने का नहीं बल्कि भाजपा के खिलाफ युद्ध जारी रखने का समय है। निर्वाचन आयोग की ओर से जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पांच और 'आप' ने छह सीट पर जीत हासिल कर ली है। भगवा पार्टी 27 साल बाद दिल्ली में सरकार बनाने की ओर अग्रसर है।



दिल्ली विधानसभा चुनाव- इंटरस्टिंग फैक्ट्स

- 2020 में भाजपा ने महज 8 सीटें जीती थीं। 2025 में 6 गुना ज्यादा यानी 48 से ज्यादा सीटें पर जीती।
- केजरीवाल की नई दिल्ली सीट पर 20 उम्मीदवारों की जमानत तक जब्त हो गई। इन्हें मिले वोट तीन अंकों तक भी नहीं पहुंच सके।
- दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के परिणामों के अनुसार, कांग्रेस के 70 में से 68 उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई है।
- केजरीवाल को प्रवेश वर्मा ने 4089 वोटों से हराया, जबकि संदीप दीक्षित को 4568 वोट ही मिले।
- भाजपा के दोनो पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे चुनाव जीत गए हैं। नई दिल्ली से प्रवेश वर्मा और मोतीनगर से हरीश खुराना। प्रवेश पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के बेटे हैं। खुराना पूर्व सीएम मदन लाल खुराना के बेटे हैं।

दिल्ली के दिल में मादनी

पीएम मोदी ने 'यमुना मैया की जय' का नारा लगाया कहा- इसे दिल्ली की पहचान बनाएंगे; देश की राजधानी आप-दा से मुक्त हुई

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पीएम मोदी ने भाजपा हेडक्वार्टर में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत यमुना मैया की जय के नारे के साथ की। उन्होंने कहा- आज दिल्ली में दिल्ली के लोगों में एक उत्साह भी है और सुकून भी है। उत्साह विजय का है, सुकून दिल्ली को आप-दा से मुक्त कराने का है। आपने दिल खोलकर प्यार दिया। मैं दिल्लीवालों को नमन करता हूँ। मोदी ने कहा कि आपके इस प्यार को विकास के लॉन्ग रूट पर हम लौटाएंगे। दिल्ली के लोगों का ये प्यार ये विश्वास हम सभी पर एक कर्ज है। दिल्ली की

डबल इंजन सरकार दिल्ली का डबल तेजी से विकास करके ये कर्ज चुकाएगी। इससे पहले भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पीएम मोदी का स्वागत किया। उन्होंने कहा- यह चुनाव और इससे पहले का लोकसभा चुनाव में दिल्ली की जनता ने एकमत संदेश दिया। यह संदेश है कि दिल्ली के दिल में मोदी बसता है। इस कार्यक्रम में गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष और स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, भाजपा सांसद मनोज तिवारी और दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा समेत बड़े नेता मौजूद हैं।

भाजपा की 40 सीटें बढ़ीं, आप को 40 का ही नुकसान

भाजपा ने दिल्ली में 27 साल बाद स्पष्ट बहुमत हासिल किया। दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों में से भाजपा ने 48 और आम आदमी पार्टी ने 22 सीटें जीतीं। कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली है। भाजपा ने 1993 में 49 सीटें यानी दो तिहाई बहुमत हासिल किया था। 1998 के बाद कांग्रेस ने 15 साल राज किया। इसके बाद 2013 से आम आदमी पार्टी की सरकार थी।



मोदी ने कहा- मैं मानता हूँ कि विजय मिले तो अपनी को नहीं छोड़ना

पीएम मोदी ने कहा- मैंने हमेशा जिस मंत्र को जिया है, जिसे मैं स्मरण करता हूँ। वो है हमें हमेशा, जब-जब विजय मिले अपनी नम्रता को कभी छोड़ना नहीं है, विवेक, समाजसेवा के भाव को नहीं छोड़ना है। हम सत्ता सुख के लिए नहीं सेवा भाव के लिए आए हैं। हम शक्ति और समय सेवा के लिए खपा देंगे।



प्रवेश वर्मा नहीं, ये हो सकते हैं दिल्ली के नए सीएम

दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजे हैरान करने वाले आए हैं। दिल्ली में कमल का कमाल ऐसा दिखा कि इसने झाड़ू के तिनके को बिखेर कर रख दिया। अरविंद केजरीवाल, मनीष सिंसोदिया, सौरभ भारद्वाज सरीखे नेता को भी जनता ने विधानसभा से बाहर का रास्ता दिखा दिया। कांग्रेस का तो नामोनिशां इस बार भी नहीं दिख रहा। अब सवाल ये उठ रहा है कि आखिर बीजेपी ने इस बार भी इतनी बड़ी जीत कैसे पा ली? दरअसल, दिल्ली विधानसभा चुनाव में इस बार बीजेपी करो या मरो के मूड से मैदान में उतरी थी। उसके हाथ से सत्ता गए 27 साल हो गए थे। 2014 से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में बीजेपी की सरकार धमकेदार तरीके से चल रही है। लेकिन दिल्ली में 90 के दशक में सत्ता में आने के बाद से ऐसे बाहर हुई कि ढाई दशक तक अपना सीएम बनाने का ख्वाब हकीकत में नहीं तब्दील हो सका। लेकिन इस बार दिल्ली में बीजेपी ने पूरा दम लगाया। दिल्ली में पिछली दफा आखिरी बार बीजेपी की तरफ से 1998 सुषमा स्वराज ने दिल्ली के सीएम पद की शपथ ली थी। अब बीजेपी की तरफ से 27 साल का वनवास खत्म कर मुख्यमंत्री कौन होगा इसकी चर्चा भी तेज हो चली है। क्या अमित शाह प्रवेश वर्मा को आगे करेंगे या किसी अन्य नेता की लॉटर्री लग सकती है। कुल मिलाकर कहे तो दिल्ली की सीएम की कुर्सी पर मोदी-शाह का फैसला क्या होगा?



बीजेपी के सबसे बड़े सिख नेता

दिल्ली के रजौरी गार्डन से विधानसभा चुनाव में उतरने वाले मनजिंदर सिंह सिरसा केंद्र शासित प्रदेश में बीजेपी के सबसे बड़े सिख चेहरे हैं। रजौरी गार्डन में उनका मुकाबला आम आदमी पार्टी से धनवती चंदेला और कांग्रेस के धर्मपाल चंदेला से हुई। 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में रजौरी गार्डन विधानसभा सीट से आम आदमी पार्टी के धनवती चंदेला ने 62,212 वोट पाकर जीत हासिल की थी। दूसरे नंबर पर बीजेपी के रमेश खन्ना रहे थे। 2013 में सिरसा इसी सीट से शिरोमणि अकाली दल से चुनाव जीते थे। तब शिअद एनडीए का हिस्सा थी। इस सीट पर 2017 में उपचुनाव हुए थे। दरअसल, इस सीट से आम आदमी पार्टी के तत्कालीन विधायक जरनेल सिंह के इस्तीफा देने की वजह से उप चुनाव हुए थे। सिंह ने 2017 के पंजाब विधानसभा चुनाव में तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए रजौरी गार्डन विधानसभा सीट से अपनी सदस्यता छोड़ी थी। उपचुनाव में बीजेपी ने आम आदमी पार्टी से ये सीट छीन ली थी। उसके उम्मीदवार मनजिंदर सिंह सिरसा ने 40,602 वोट पाकर जीत हासिल की थी। 2021 में वो बीजेपी में शामिल हो गए। हो सकता है कि उन्हें मुख्यमंत्री बनाकर बीजेपी एक साथ दिल्ली से लेकर पंजाब को भी साधना चाहती है। किसान आंदोलन की वजह से सियासी तौर पर ऐसी धारणा बनी है या बनाई गई है कि बीजेपी से सिख समुदाय का एक बड़ा तबका नाराज है। दिल्ली में सिख समुदाय के लोगों की भी अच्छी जनसंख्या है। वे आबादी के 4.43 प्रतिशत हैं।



एलजी के करीबी रहे ये नेता को भी सौंपा जा सकती है कमान

दिल्ली के बिजवासन सीट से मैदान में उतरे कैलाश गहलोत आम आदमी पार्टी की सरकार में मंत्री रहे। दिल्ली में 15 अगस्त 2024 को एलजी ने उन्हें ही झंडा फहराने का मौका दिया था। मुख्यमंत्री के तौर पर अरविंद केजरीवाल शराब घोटाले के मामले में तिहाड़ जेल में बंद थे। बाद में वो बीजेपी में शामिल हो गए। उनका मुकाबला पिछली बार आप के सुरेंद्र भारद्वाज और कांग्रेस ने देवेंद्र सेहरावल से हुआ। आप की ओर से कैलाश गहलोत दिल्ली की नजफगढ़ सीट से लगातार दो बार (2015 और 2020) चुनाव जीते थे, जबकि इस बार भाजपा ने उन्हें बिजवासन से अपना उम्मीदवार बनाया। कैलाश गहलोत जाट विरादरी से आते हैं। जिसका दिल्ली के कई इलाकों में बड़ा दबदबा है। बीजेपी अगर इन्हें मुख्यमंत्री बनाती है तो इसके जरिए एक तो जाटों में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश करेगी। वहीं आम आदमी पार्टी के सामने उसी के पुराने नेता को खड़ा करके उसके जनाधार में सेंध लगाने की कोशिश करेगी। चुनाव से पहले केजरीवाल ने जाटों को केंद्र की ओबीसी लिस्ट में शामिल करने की मांग करके इस वर्ग को खुश करने का दांव चला था। लेकिन वो सफल नहीं हो सके।

बीजेपी जीती.... कौन बनेगा दिल्ली का मुख्यमंत्री

बीजेपी में यूं तो विधायक दल ही अपना नेता चुनता है। लेकिन आज की तारीख में माना जाता है कि प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की हामी बहुत मायने रखती है। इसके साथ लोकसभा चुनावों के बाद माहौल में आरएसएस की सहमति की भी अपेक्षा की जा सकती है। दिल्ली बीजेपी के सूत्रों की माने तो पार्टी के अंदर तीन से चार नामों की जानकारी सामने आ रही है। बीजेपी के सीएम दावेदारों में सबसे पहले मनजिंदर सिंह सिरसा का नाम आ रहा है। उसके बाद आम आदमी पार्टी से बीजेपी में आए कैलाश गहलोत का नाम भी सामने आ रहा है। तीसरे नाम के तौर पर निवर्तमान विधानसभा में पार्टी विधायक दल के नेता विजेंद्र गुप्ता का नाम भी सुनाई पड़ रहा है।

केजरीवाल की हार के चर्चे

दिल्ली को अभी पूर्ण राज्य का दर्जा भी नहीं मिला है। दूसरे विधानसभा सीटों के मुकाबले देश की राजधानी के चुनाव परिणामों को लेकर आम लोगों की दिलचस्पी को नेशनल मीडिया में मिल रही कवरेज से आंका जा सकता है। ये दिल्ली चर्चा के नेशनल कैपिटल होने की वजह से ज्यादा पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल की वजह से भी है। अरविंद केजरीवाल ने देश में नई तरह की राजनीति की शुरुआत की। सरकारें आम जनता के फायदे के लिए बहुत पहले से काम करती नजर आ रही हैं। लेकिन अरविंद केजरीवाल की जनता को सीधे फायदा पहुंचाने वाली मुफ्त की घोषणाओं ने उन्हें दिल्ली और पंजाब में मशहूर कर दिया। एक तरह से वो हीरो बन गए। लेकिन इस बार बीजेपी की हार से ज्यादा केजरीवाल के हार के चर्चे हैं। इसके साथ ही वो जिस तरह से पीएम मोदी और बीजेपी पर हाई डिफिटिंग करते हैं उससे देश में काफी लोग ये मानने लगे कि मोदी का मुकाबला वही कर सकते हैं।



बिना दूल्हे की बारात

जिस तरह आम चुनाव के दौरान देश की राजनीति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इर्द-गिर्द घूमती है। कुछ उसी तरह दिल्ली में होने वाला विधानसभा चुनाव अरविंद केजरीवाल के आस पास ही रहता है। चाहे वो जीते या हारे वो चुनाव का चेहरा हैं। बाकी सभी उनकी प्रतिक्रिया में अपनी रणनीति बना रहे हैं। इस बार दिल्ली की राजनीति से देश की राजनीति पर प्रभाव साफ नजर आने वाला है। दिल्ली में बीजेपी की जीत के साथ उसका सूखा खत्म हो गया। पूरे चुनाव दिल्ली की सत्ता पर काबिज आम आदमी पार्टी बीजेपी को इसे मुद्दे पर घेरती रही है कि उसका मुख्यमंत्री का चेहरा कौन है? पार्टी भारतीय जनता पार्टी के लिए बिन दूल्हे की बारात भी निकाल चुकी है। लेकिन जिस तरह से आम आदमी पार्टी ने इस बार के चुनाव में सबसे ज्यादा चुनौती झेली। बीजेपी की जीत के साथ ही अब पार्टी के अंदर मुख्यमंत्री के नामों पर दबे जुबान में चर्चा शुरू हो चुकी है।



10 सालों से लगातार केजरीवाल और आप के खिलाफ पार्टी के धाकड़ नेता की भूमिका निभा रहे हैं। इनका पार्टी कैडर भी काफी मजबूत है और उस पर पकड़ भी है। संगठन में गुप्ता की स्थिति मजबूत मानी जाती है। हालांकि प्रवेश वर्मा के बारे में इस बात की चर्चा है कि आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल को चुनाव में हरा देने के बाद उन्होंने अपनी दावेदारी सबसे ज्यादा मजबूत कर ली है। नई दिल्ली सीट पर जीत के बाद उनके गृह मंत्री अमित शाह संग मुलाकात की भी खबर सामने आई है। प्रवेश वर्मा दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के बेटे हैं और बीजेपी की तरफ से एक बड़ा जाट चेहरा भी हैं। ये वो नाम हैं जिनकी चर्चा तेज है। लेकिन बीजेपी हर बार सीएम के नामों को लेकर चौंकाती रही है। ऐसे में क्या इस बार भी दिल्ली में ऐसा ही हो सकता है। सीएम फंस को लेकर मध्य प्रदेश से लेकर राजस्थान तक में बीजेपी ने हमेशा चौंकाया है। यानी बीजेपी की रणनीति मुख्यमंत्रियों को लेकर ऐसी रही है जिससे राजनीतिक विश्लेषक भी हैरान रह गए।

रोहिणी से चुनाव मैदान में उतरने वाले विजेंद्र गुप्ता बीजेपी के मौजूदा विधायक भी रहे हैं। गुप्ता रोहिणी से ही पहले भी लगातार दो बार विधायक रह चुके हैं। इस बार उनका मुकाबला आप के निगम पार्श्व प्रदीप मिश्र और कांग्रेस के सुमेश गुप्ता से हुआ। इस बार के चुनाव में अरविंद केजरीवाल खुद को बिनया बताते हुए वैश्य समाज का वोट पाने की कोशिश करते देखे गए। गुप्ता दिल्ली में बीजेपी के वरिष्ठ नेता भी हैं। वो बीजेपी के दिल्ली के बड़े चेहरे माने जाते हैं। पिछले 10 सालों से लगातार केजरीवाल और आप के खिलाफ पार्टी के धाकड़ नेता की भूमिका निभा रहे हैं। इनका पार्टी कैडर भी काफी मजबूत है और उस पर पकड़ भी है। संगठन में गुप्ता की स्थिति मजबूत मानी जाती है। हालांकि प्रवेश वर्मा के बारे में इस बात की चर्चा है कि आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल को चुनाव में हरा देने के बाद उन्होंने अपनी दावेदारी सबसे ज्यादा मजबूत कर ली है। नई दिल्ली सीट पर जीत के बाद उनके गृह मंत्री अमित शाह संग मुलाकात की भी खबर सामने आई है। प्रवेश वर्मा दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के बेटे हैं और बीजेपी की तरफ से एक बड़ा जाट चेहरा भी हैं। ये वो नाम हैं जिनकी चर्चा तेज है। लेकिन बीजेपी हर बार सीएम के नामों को लेकर चौंकाती रही है। ऐसे में क्या इस बार भी दिल्ली में ऐसा ही हो सकता है। सीएम फंस को लेकर मध्य प्रदेश से लेकर राजस्थान तक में बीजेपी ने हमेशा चौंकाया है। यानी बीजेपी की रणनीति मुख्यमंत्रियों को लेकर ऐसी रही है जिससे राजनीतिक विश्लेषक भी हैरान रह गए।

